नयी समीक्षा

बीसवीं सदी के इतिहास में नयी समीक्षा एक प्रमुख आलोचना सिद्धांत के रूप में विख्यात रहा है। उसके प्रमुख प्रवर्तक जान कोरैन्सम थे। जिन्होंने 1941 में अपनी पुस्तक ' द न्यू किटिसिज्म ' से इस सिद्धांत की नीव रखी। जहाँ तक नयी समीक्षा शब्द के व्यवहार का प्रश्न है तो इसका इस अर्थ में पहला प्रयोग जे0 ई0 स्पिंमार्न के ' द न्यू किटिसिज्म ' लेख में मिलता है। इस प्रकार की समीक्षा पद्धति के प्रमुख आलोचकों में एफ0 आर0 लीविस , क्लीन्थ ब्रुक्स विलियम एम्पसन , उलनटेअ , रिलियर्ड डबलू के विम्बसाइट प्रमुख है।

नयी समीक्षा मुख्यतः अमेरिका आलोचको का प्रमुख सिद्धांत है जो मार्क्सवदी, मनतेविश्लेषणवाद अस्त्विवादके विरोध की बुनियाद से उत्पन्न हुआ है। वह एक तरफ साहित्य में मार्क्सवाद के राजनीतिक एवं सामाजिक निहितार्थो का विरोधी रहा है तो दूसरी तरफ मनोविश्लेषण एवं अस्तित्व के रचनाकार केन्द्रित समीक्षा का विरोध भी करता है।

नयी समीक्षा पर रूसी रूपवादियों का प्रभाव पड़ा है। वे रूसी रूपवादियों की तरह कृति को केंद्र में रखते हैं। प्रारम्भ मे नयी समीक्षा के अंतर्गत कृति के समग्र मूल्यांकन पर जोर दिया जाता था किन्तु कालान्तर में नयी समीक्षा में किसी कृति के रूप पक्ष पर अधिक जोर दिया जाने लगा। विम्साट ने एक जगह लिखा है कि कवि अपने उद्देश्य में सफल हुआ या नहीं यह उसकी कृति में ही देखना चाहिये। कविता का शैली का चमत्कार है जिसके द्वारा अर्थ को संप्रेषित किया जाता है।

स्पष्ट है कि विम्साट कृतित्व पर बल देते है तथा साथ ही शैली को महत्वपूर्ण मानते है। एलेन टेट कृति में 'तनाव' र बल देते है। उनका मानना है किसी कृति की रचना प्रकिया मे माध्यम एवं आशय के बीच तनाव होता है। कोई रचनाकार इस तनाव को कितना साध सका है यह उस कृति की सफलता पर निर्भर होता है।

विलियम ऐम्पसन अपनी पुस्तक ' सेवन टाइम्स ऑफ एम्बिग्यूइटी ' में किसी कृति की संरचना में उपस्थित तत्वों की व्याख्या करते है। उनके विचार से नयी समीक्षा का प्रमुख विचार विन्दु शब्दावली , शब्दों की बुनावट अर्थ का ढांचा शब्दार्थगत श्लेंष, संदेह , विरोधाभास, सादृश्य विधान आदि पर केन्द्रित होना चाहिये। क्योंकि ये किसी रचना प्रकिया मे अपनी विशिष्ट भूमिका निभाते है।

नयी समीक्षा के क्षेम मे विरोधाभास सिद्धांत की चर्चा कलीन्थ ब्रुक्स ने विस्तारसे की है। इस संदर्भ मे उनकी दो पुस्तके उल्लेखनीय है 1. मार्डन पोइट्री एण्ड ट्रेडीशन 2.

Scanned by CamScanner

अण्डरस्टैंडिग पोइट्री । उनका स्पष्ट मानना है कि ' कवि जिस प्रकार के सत्य का कथन करता है वह विरोधाभास पूर्ण शब्दो द्वारा ही व्यक्त किया जा सकता है। '

यदि नयी समीक्षा सम्बंधी वहसों का अध्ययन करे तो पता चलता है कि नयी समीक्षा के सभी आलोचक कविता को शुद्ध रचना के रूप में मानकर उसके संरचनात्मक एवं भाषागत तथा रूपगत विश्लेषण पर अपने को केन्द्रित करते है।

नयी समीक्षा किसी कृति की स्वायत्तता पर बल देती है। वह समाज इतिहास युगबोध को रचना प्रकिया का अभिन्न अंग नहीं समझती है। दरअसल यह विचारणा दरअसल सामाजिक एवं ऐतिहासिक आधारों को पूरी तरह दर किनार करती है।

अमेरिका में नयी समीक्षा और मार्क्सवादी आलोचना में जो टकराव हुआ था उसमें नयी समीक्षावादियों की ही विजय हुयी थी और एफ0 आर0 रजीवीस के नेतृत्व में अमेरिका के साहित्यिक आलोचना के मैदान मे उसे परास्त किया था। मार्क्सवादी साहित्यिक आलोचना में राजनीति पर अधिक बल देने के कारण रचना की रचनात्मक पर बात कम हुयी है। मार्क्सवादी आलोचना में किसी रचना के रूप पक्ष पर लगभग न के बराबर विचार किया गया। जिस पर नयी समीक्षा ने अपना ध्यान केन्द्रित किया। लेकिन इस प्रकिया में साहित्यिकत या कलात्मकता तथा रूप पक्ष पर अधिक बल देने के कारण नयी समीक्षा ने रचना के सामाजिक उत्स पर विल्कुल ध्यान नहीं दिया।

नयी समीक्षा ने न तो किसी रचना की सामाजिक अस्मिता को स्वीकार किया और न ही उसके ऐतिहासिक संदर्भ पर ही बल दिया। ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि नयी समीक्षा के विषय विवेचना मे 'अन्तर्वस्तु ' पर बहुत कम ध्यान दिय गया। यद्यपि एफ0 आर0 लीविस यह मानते थे कि किसी रचना के मर्म को जानने के लिये उसका एक अच्छा पाठक होना चाहिये। टी0एस. इलियट जब ' पोयम आन द पेज' की बात करते है तब टी0 एस0 इलियट भी कृति की समग्रता पर ही जोर देते हैं। लेकिन इस कृति की समग्रता में परम्परा परिवेश रचनाकार आदि का कोई स्थान नहीं रहा।

दरअसल नयी समीक्षा में किसी कृति को वस्तु की तरह लिया गया। जिसके कारण नये समीक्षको का मूल उद्देश्य वस्तुपरक स्वरूप को विश्लेषण करना है। नयी समीक्षा दृष्टि की आलोचना करते हुये मैनेजर पाण्डेय ने लिखा है कि " नयी समीक्षा की आलोचना दृष्टि को स्वीकार करने के बाद साहित्य के इतिहास की संभावना समाप्त हो जाती है और अगर कोई इतिहास बनता है तो वह स्वतंत्र , परस्पर विच्छिन्न रचनाओं की श्रृंखला मात्र होगा जो इतिहास होगा ही नहीं।'

Scanned by CamScanner

दरअसल नहीं समीक्षा के आलाचकों ने कविता या कला के बारे में विचार करते हुये लिखा है कि " कविता स्वयं ही अपनपा उद्देश्य है। उसमें किसी संदेश की खोज करना आवश्यक नहीं। कविता में मुख्य वस्तु है सौन्दर्यानुभूति । उसी को प्राप्त करना ही कविता को पाना है। दरअसल नयी समीक्षा लगभग अपने पूर्ववर्ती सिद्धांत ' कला कला के लिये' सिद्धांत को ही पिष्टपेषण करती है। दोनो की बनियादी मान्यतायें लगभग एक है। उनमें कोई मौलिक भेद नहीं दिखाई पड़ता ।

लेकिन ऐसा नहीं है कि नयी समीक्षा का अपना कोई मौलिक योगदान नहीं है। नयी समीक्षा ने जो सबसे बड़ा योगदान दिया यह था किसी रचना का गहराई से अध्ययन। इसने किसी कृति के मूल्यांकन के संदर्भ में वाह्य प्रभाव को नकारात्मक मूलतः रचना की अपनी आन्तरिक संरचना एवं उसमें निहित उदिष्ट के आधार पर मूल्यांकन के संदर्भ में वाह्य प्रभाव या किसी सिद्धांत की आड़ में उस पर सतही आलोचना का दी जाती थी।

फिर रचना के मूल्यांकन के लिये रचना से ही निः सृत मानदण्ड़ों को आधार मानना। यह बहुत बड़ा योगदान है नयी समीक्षा का।

Scanned by CamScanner